आज

लखनऊ,2 जुलाई, 2016

गन्ना अधिकारियों का पन्द्रह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

लखनऊ, शुक्रवार। आज से भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा. राजेन्द्र कुमार द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, बिहार तथा तमिलनाडु के 20 गन्ना विकास अधिकारी/गन्ना प्रबंधक भाग ले रहे हैं। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डा. राजेन्द्र कुमार ने चीनी उद्योग में सम्मिलित सभी एजेन्सीयों/संस्थाओं जैसे शोध संस्थान, चीनी मिल, गन्ना विकास विभाग तथा किसान को साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने का आह्वान किया जिससे इस उद्योग की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके। और तभी गन्ना किसान खुशहाल होंगे। उन्होंने अपने उद्बोधन में चीनी मिलों के प्रतिनिधियों को बेहतर मिल तथा गन्ना प्रबंधन करने का सुझाव दिया जिससे चीनी परता और बेहतर हो सके। संस्थान के निदेशक डा. ए.डी. पाठक ने इस अवसर पर प्रतिभागियों तथा संस्थान के वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि खराब मृदा स्वास्थ्य, बढ़ता गन्ना उत्पादन लागत, गुणवत्ता पूर्ण गन्ना बीज की कमी तथा श्रमिकों का अभाव चिंता का विषय है। इन सभी समस्यओं को समाधान संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों के प्रयोग से संभव है। संस्थान द्वारा विकसित किस्म कोलख 94184 की खेती पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में लगभग एक लाख हे. क्षेत्रफल में किया जा रहा है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी व प्रधान वैज्ञानिक डा. ए.के. साह इस कार्यक्रम पर विस्तार पूर्वक जानकारी दिया तथा उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान अपने संसाधनों/तकनीकों के माध्यम से किसानों एवं चीनी उद्योग के खुशहाली के लिए लगातार प्रयासरत है तथा इस दिशा में विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। जिसके फलस्वरूप उत्तर प्रदेश में इस वर्ष गन्ना उत्पादकता तथा चीनी परता में वृद्धि दर्ज की गई है। संस्थान द्वारा क्रियान्वित अनेकों कार्यक्रमों में से यह प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। प्रशिक्षण के दौरान गन्ना विकास अधिकारियों को गन्ना प्रबंधन एवं उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर आधुनिक व वैज्ञानिक जानकारी प्रदान कर उन्हें अधिक सक्षम, शिक्षित एवं बौद्धिक रूप से मजबूत बनाया जाएगा। इसके लिए गन्ना उत्पादन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रजाति नियोजन, बीज उत्पादन, आधुनिक बुवाइ विधया, पोषक तत्व प्रबंधन, एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जलवायु लचनशील गन्ना कृषि, पोस्ट-हार्वेस्ट प्रबंधन, गन्ना विपणन व आय-व्यय आंकलन इत्यादि पर आधुनिक जानकारी प्रशिणार्थियों को दिया जाएगा।

the pioneer
LUCKNOW | SATURDAY | JULY 2, 2016

'Effective tech transfer necessary for prosperity of cane farmers'

PIONEER NEWS SERVICE ■
LUCKNOW

Effective technology transfer is a must for the economic prosperity of the sugar industry and the farmers. This was stated by Dr Rajendra Kumar, Director General, UPCAR, while inaugurating the 15-day-long National Training on Sugarcane Management and Development at the Indian Institute of Sugarcane Research here on Friday.

He said that joint efforts should be made by the researchers, millers and development departments for the economic well being of the canegrowers of the country.

"About 50 million farmers are cultivating sugarcane on a 50 -lakh hectare area and producing 350 million tonnes at the rate of 70 tonnes per hectare. A total of 525 working sugar mills are producing 250 lakh tonnes of sugar. Despite large-scale operation of sugarcane and sugar industry the financial position of this sector is in doldrums," he said.

Dr AD Pathak, Director, IISR, said that the declining soil health, escalating cane cultivation cost, great need, high cost of seeds and great labour demand were some major concerns in sugarcane production and these could be addressed by application of the IISR technology.

He said that for producing a large quantity of sugarcane to run the mills to their full capacity there were two options, either to increase the sugarcane production vertically or increase the area under sugarcane cultivation.

"The second option is not possible as the area under agriculture is decreasing day by day. The only option left therefore, is to increase the production vertically by the use of innovative technologies. However, effective use of technology largely depends on the knowledge and motivation of the personnel engaged in the cane development activities. They should be made aware about the new technologies so that in turn they can train and help the sugarcane growers for effective utilisation of innovative technologies," he stated.

The Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow, is organising a 15-day-long National Training on Sugarcane Management and Development for the sugar mill officers from July 1-15, 2016, to train them in the latest techniques of sugarcane production.

The incharge of this national training, Dr AK Sah, Principal Scientist, said that stress was also being laid on providing knowledge in varietal planning, maturity survey, harvesting and other related activities for ensuring a sufficient quantity of good quality sugarcane to maintain the desired level of sugarcane recovery throughout the forthcoming crushing season.

In this training 20 cane development officers and managers from UP, Bihar and Tamil Nadu are participating.